Sr.no	page numbers	book name	author	commentary by	patronge king	book name	author	commentary by	patronge king	notes
1	1-249	Raghavapandaviya	Kaviraja	Shashidhara	Amarasimha	राघवपाण्डवीय	कविराज	शशिधर	अमरसिंह	the short form of the text is written slightly different from page 1- 34 and 35 - 249 though it's a complete text along with its commentry

1-249

१-३५

1 →

४. श्रीगणेशं रमानाथं _त्वा गुरुपदाम्बुजम्

रघुपाण्डुमये काव्ये मया टीका प्रतन्यते ॥ तत्रादौ कविरार_

ग्रन्थ समाप्त्यर्थ मिष्टदेवता नमस्काररूपं मङ्गलं कुर्वन्नाह॥ _

ति । तस्मै ब्रह्मणे नमोऽस्तु ब्रह्माणं नमामीत्य_ कीदृशं स्वमधि (-)

ष्ठानमासनं यदम्बुजं पद्म तस्य रजः पु _ परागसमूहः तद्व

३५-२४९

249 →

… इति श्रीहलधर

णीप्र_त कादम्ब कुलतिलक चक्रवर्ति वीर श्रीकामदेव प्रोत्सा

हित कवि राजपण्डित विरचिते राघव पाण्डवीये महाकाव्य

कामदेवाच्छे रावण दुर्योधन वधः श्री रामयुधिष्ठिराभिषेकौ ना(-)

म त्रतोदशः सर्गः

इति समस्तप्रक्रिया विराजमान रिपुराज कंसनारायण

श्रीनारायण चरणमरायण महाराजाधिराज श्रीमदऽम(-)

रसिंहकारिते महाश्रीशशिधरकृते राघव पाण्डवीयप्रका

शे त्रयोदशः सर्गः । समाप्तमिदं महाकाव्यं सटिक

मिति भद्रमोतत्सत्

Raghav Pandaviyam of Kaviraj Pandit with Prakash Tika of Vanshidhar
Patronage of Amar Simha

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ 𑇑𑇐 ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ 𑇑𑇑 ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ 𑇑𑇒 ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ १७ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ १८ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

10

[illegible]

[illegible] ॥ ३० ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ३१॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

33

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

62

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

गप्पु.
पा.ली.
३५

[illegible]

[illegible] ॥ १ ॥

[illegible] ॥ २ ॥

[illegible] ॥ ३ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ग्रन्थ. पत्री. ५०

[illegible]

: ॥

[illegible]

ग्रंथ. पत्री. ५३

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥

[illegible]

[illegible] ॥ ३७ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

3 ॥

[illegible]

॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥७५॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥७६॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥७७॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ १० ॥ [illegible] ॥ ११ ॥ [illegible] ॥ १२ ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

परीत्युक्त्वा विपन्ने कालेमन्त्रः जयति । यदि पञ्चकादेकं पञ्चभूतः ।
भाकलाप्तिजं सूत्रमयुत्तं दृष्टिमात्रं वेदुमेटानि पुष्पिष्टस्य पञ्चगु
प्रमेतपादिकस्मिन्वा सधर्मभावनम् ॥०३॥ एवं प्रदन्तस्य पयोप
सीमं भवतु भायुक्तपञ्चधारित्वम् पञ्चनामिक्रिया विधिपूर्वकं यम
दस्योर्भुवनतोऽभिनाम् ॥ सकलभुवनेन्द्रियः शरीरः भवति
मुत्तमेवं तत्त्वे तत्पदे भ मतं वा यद्भावः नुन्वा च्छामितं मस्तकः
मेघैः परिक्षुं पदुत्तरं सुप्रयुक्तनिकाम्यित्वनि नानाविधानु पुष्पानि यत्र
वंविदर्पेतीभव्यानका विमिपेन पूर्वकालिनि पल्लवानिः
गन्धमलविद्यानन्द स्मृतीया पलं अन्य भवेतु भीमं तथा उपलानि च
पत्रे पल्लव मतिमं भवत्यन्मदं विनिपेक्षिः यत्र तु वृहस्पतेः मे
त्यानि मकरन्द्रावेद पुष्पस्य भक्त्यादि प्रयत्नलक्षणः ॥०७॥
विद्यीधम्मिचिन्ताकृत्तं कृत्वा किं देवं नः जपः अमर प्रणमन्तः
कृपया वकुवचनेन कारुणिक विनिमाशरणं भा ॥ विद्यीध नाम प्रपा
मत्तानां पीयूषः नियामकत्व भवानां पनीकानिमानानि प्रपयां
कुवक्रियोपादिभ सप्तक पनीकतेव नीकानि मेत्राणि पनीकानि क
पयांवकुचादि सिद्धिम् किंतु तः मत्स्याङ्कः मुख्यादिकं वृत्तं
प्रमदजे गमनं निश्चेन तयन जलधः जन्तुं प्रतिध्वनिकाः यामानु
प्रकुम नीतिदुःखे विपद्यः कुः मुनि भवे कथितः परमे भविष्ये
विवीतिम । पत्रे किंभ जन्तुः पत्रे ऋषः कदयेन पत्रहनिनानि मन्त्र
नाम्भवेकानीहन्त्रः ॥१०॥ परिष्कृत कुसुमकमण्डलेषु च पद्मलेख
नापीतलक्ष्म उत्पादिबुद्धिपवनं पधकोलकमम् प्रत्यक्षिवमपङ्क
तः ॥ मधुपकृतं च पद्मलोकमः विद्या खिलः सेतुः नवपत्रलं
मेदं पधकैलालि भुङ्क्ष्व उपयुक्त किं तु तः परिष्कृत कुसुमकमण्डलं
यवमः मानवानां वीर करीवाद्य लक्ष्मीलिप्तकानिपद्म मपङ्क
त्वमयूरपत्रे किलालि लिकानिव । पत्रे चपद्मपल्लवे विद्याधवनं
मेहदयेन मेदं मानवीक्षत्रभव लक्ष्मपलं सिक्कं यमस्य भयप्रा उत्प

गप.
पाली.
३८

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

33

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ‖८५‖ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ‖८६‖ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ‖८७‖ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

1981

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

2004

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

212

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

चपभूतः लक्ष्म्याः पुकमपि स्वल्पमपि ठक्कुं न मेदकमेरु तस्य कुविम
मर्कुमे कुलगोऽपि भद्रोऽपि यथा मद्रेमोलित्तत्रुष्टमिरेमलं त्पद्
यं न भक्ते किपास्त्रचल यद्यि ऽमुलिम्नाउं किंतुरेन क्रूरतास्य
ध्येयेन ध्येयेन्द्रकेन भक्तमाति भवपायिनां कामीनां वक्तास्य स
ज्ञाति: पलदमे: इत्कस्य यमेतु: तास्कु ल्पयकष्टु येनभ: पत्र
चपभूतलून: उकमपि मोलितत्रुपकं किमपि पनयनं नमेक
३उमीपुं क्कदेपश्रुत्रु यरि कल्पनाविगमिरं कीप्रमेन यांकिंचित्
वेतास्य: मरतुष्टध्येयेन ध्येयेन केन कल्पेन किल मीयतुलेसितु
विलयनामावामीलुनतवपत्यदक्षितुऽउ ॥ ५० ॥ अतुरेधवमवात्
नम्भनात्परु निनामकतुउतीशुरुत्रुनः श्रद्दणाउितिमापाः भ्रतेनेरि क
लभ्रुप्रलावियधुर्निक्रूल: ॥ चभनालक्ष्म्येन उपनुमीपुं येध
वमवातुना मकुने श्रद्दणाउि वगेतु गतिमापउं लक्ष्मीजद् विभिषा:
तत्: श्रुतेनि विस्तरितु: कितुउरतु: यतिश्रुति उपरतिमा प्रऽ
टहु पीतव: कीस्वन: करु निनामेन पत्र मुल मस्तेन लक्रूतलगुउतीर
भ्रभाकुलापक्ष येनु कल्पसे: कुम्भलविष्यनुनेनेकुल भीक्ष्णुऽ
ति पत्रे चभनामुनेन कल्पष्ट रायेयष्टउ येवि विष्यनुनेनेकेल
भीक्ष्ण: उत्र महत्ता ॥ ११ ॥ प्रतुमत्र्रपत्यानिषरतुष्टक्रनापम:
तस्य कम्रभक्तहेतुनमेरुनमेवल: ॥ ननमेवल: लक्ष्म्या मूरे
मितुमितुतस्य कम्रभक्ता नमेरुन भातिरवान किंतुश्रुतश्रुत
रुष्टरेश्रुमेदपायपाकुष्टा निधरश्रुतनश्रुगभनष्टापाद्रिपत्रेष्ट
श्रेषि पत्रे ननमेवल: चलुनु: मेरुकल्पष्ट पयस्पाविष्टापत्रे
मकुष्ट रश्रुतषमकृष्यतुष्ट पयवनिधरष्टस्पनष्टापत्रष्ट ॥ १२ ॥
३३: भ्रीरे लगाउीनु भ्रतभ्भभ उभिक्षुक्रभगालवष्ट मकुपयमकुं
मरुलीकाष्टिक्रुल्पतु मङ्कुं मा भद्रभक्त ॥ लगाउीकुष्ट पंक्षीस
प्रस्मावश्रुमत्र: लक्ष्म्या: माभक्ष्म भलप्रज्ञवान् कल्पतुं कल्पपद

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

252

